

Padma Shri



PROF. (DR.) ADITYA PRASAD DASH

Prof.(Dr.) Aditya Prasad Dash, Vice Chancellor of the AIPH University, Bhubaneswar; Ex- Vice Chancellor of the Central University of Tamil Nadu and Ex-Regional Adviser of the South East Asia Regional Office of the World Health Organisation, is a top-ranking scientist and has significantly contributed in the field of vector borne and neglected tropical diseases affecting the marginalised community. Previously, he was the Director of Institute of Life Sciences, Bhubaneswar; Director of the National Institute of Malaria Research, Delhi and Director of the National Institute for Research on Tribal Health, Jabalpur.

2. Born on 23rd March 1951, Prof. (Dr.) Dash obtained Ph.D and D.Sc degrees from Utkal University. He started his scientific career from Indian Council of Medical Research, the thrust area being transmission biology of vector borne diseases like malaria, dengue and lymphatic filariasis.

3. Prof. (Dr.) Dash has so far published around 300 research papers in reputed journals like: Nature Genetics, Lancet Infectious Diseases and Lancet. He developed various tools, technologies and strategies which are followed by various countries for control of malaria, lymphatic filariasis (LF), visceral leishmaniasis, dengue, chikungunya, soil transmitted helminthiasis and yaws. His scientific achievements include: establishing *Anopheles annularis* as a vector in rural India; identification of telomerase in gametocytes of *Plasmodium falciparum*; proving the efficacy of Mass Drug Administration with integrated vector management in LF elimination. By addressing issues like, molecular taxonomy and phylogenetic interrelationship in mosquitoes; multiple genetic fragments with DNA sequencing studies; molecular epidemiology of mixed-species malaria infections and genomic studies of malaria parasites. He opened up opportunities for translating genetic analysis to disease biology and field application. His contribution in the field of ecological succession of mosquito species is most striking. He has also made significant contributions on epidemiology and management of neglected tropical diseases. Most of his work is translated into deliverable products.

4. Prof. (Dr.) Dash was honoured with many awards and Fellowships of scientific societies. Elsevier in their SCOPUS database ranked the Indian Scientists from their publication from 2009-13. He is rated as top rank in the area of Immunology and Microbiology and 7th in area of Medicine, among the top 10 Indian researchers. He was awarded with the ICMR's Dr T.R. Rao award (1991); Rajiv Gandhi Award, Odisha (2009); Dr A.P. Ray Award for outstanding contribution of malaria research (2012); and INBUSH award of Amity University (2017).

पद्म श्री



प्रो. (डॉ.) आदित्य प्रसाद दाश

एआईपीएच विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के कुलपति; तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और विश्व स्वास्थ्य संगठन के दक्षिण पूर्वी एशिया क्षेत्रीय कार्यालय के पूर्व क्षेत्रीय सलाहकार, प्रो. (डॉ.) आदित्य प्रसाद दाश एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक हैं और उन्होंने गरीब तबके को प्रभावित करने वाली वेक्टर जनित और अनदेखी की जानी वाली ट्रॉपिकल बीमारियों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे पहले वह इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफ साइंसेस, भुवनेश्वर के निदेशक; राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, दिल्ली के निदेशक और राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के निदेशक थे।

2. 23 मार्च, 1951 को जन्मे, प्रो. (डॉ.) दाश ने उत्कल विश्वविद्यालय से पी.एचडी और डी.एससी. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपने वैज्ञानिक कैरियर का आरंभ भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद से किया, इसमें इनका कार्य क्षेत्र वेक्टर जनित बीमारियों जैसे मलेरिया, डेंगू और लिम्फेटिक फिलारियासिस का जैविक संचरण था।

3. प्रो. (डॉ.) दाश ने अब तक विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं जैसे नेचर जैनेटिक्स, लेंसेट इन्फेक्शियस डिजीज और लेंसेट में लगभग 300 अनुसंधान पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्होंने विभिन्न उपकरण, प्रौद्योगिकियां और कार्यनीतियां विकसित कीं जिनका विभिन्न देशों द्वारा मलेरिया, लिम्फेटिक फिलारियासिस (एलएफ), विसेरल लीस मेनियासिस, डेंगू, चिकनगुनिया, स्वाइल ट्रांसमिटेड हेल्मिन्थियासिस एंड योज के नियंत्रण में अनुसरण किया जाता है। उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों में ग्रामीण भारत में एनोफिलिस एनुआलरिस की वेक्टर के रूप में पुष्टि करना; प्लाज्मोडियम फाल्सीपेरम के गेमेटोसाइट्स में टेलोमेरेज की पहचान करना; लिम्फेटिक फिलारियासिस (एलएफ) के उन्मूलन में एकीकृत वेक्टर प्रबंधन के साथ मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन की प्रभाविता सिद्ध करना शामिल है। मच्छरों में मोलेक्यूलर टेक्सोमनी और सेलोजेनेटिक इंटर-रिलेशनशिप; डीएनए सीक्वेंसिंग अध्ययनों से मल्टीपल जेनेटिक फ्रेगमेंट्स; मिश्रित-जातियों वाले मलेरिया संक्रमणों की मोलेक्यूलर महामारी विज्ञान और मलेरिया परजीवियों के जिनोमिक अध्ययन जैसे मुद्दों पर काम करके उन्होंने जेनेटिक विश्लेषण को डिजीज बायोलॉजी और फील्ड एप्लीकेशन में बदलने के द्वार खोल दिए। मच्छरों की प्रजातियों की इकोलॉजिकल सक्सेशन के क्षेत्र में इनका योगदान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने महामारी विज्ञान और अनदेखी की गई ट्रॉपिकल बीमारियों के प्रबंधन के संबंध में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके अधिकांश कार्यों को व्यावहारिकता के धरातल पर उतारा गया है।

4. प्रो. (डॉ.) दाश को कई पुरस्कारों और साइंटिफिक सोसाइटीज के फेलोशिप से सम्मानित किया गया है। एल शेवियर ने अपने एससीओपीयुएस डेटाबेस में भारतीय वैज्ञानिकों की इनके वर्ष 2019 से 2013 तक के प्रकाशनों के संबंध में रैंकिंग तैयार की। उन्हें इम्यूनोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी के क्षेत्र में सर्वोच्च रैंक, मेडिसिन के क्षेत्र में सातवीं रैंक दी गई है और शीर्ष 10 भारतीय अनुसंधानकर्ताओं में शामिल किया गया है। उन्हें आईसीएमआर के डॉ. टी. राव सम्मान (1991); राजीव गांधी सम्मान, ओडिशा (2009); मलेरिया अनुसंधान के क्षेत्र में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए डॉ. ए. पी. रे. सम्मान (2012) और एमिटी विश्वविद्यालय के आई एन बी यू एस एच सम्मान (2017) से नवाजा गया।